निराला की कविता

~ डॉ. अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी

(हिंदी विभाग, एसजीजीएस कॉलेज, पटना सिटी)

[कक्षा, स्नातक-**द्वितीयवर्ष(प्रतिष्ठा)**, में पहले पढ़ाये गए विषय को दुहराने(रिवीजन) के लिए इस लेख की प्रस्तुति की जा रही है।]

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1899-1961) छायावाद के विशिष्ट कवि हैं। वे छायावाद के ऐसे कवि हैं जिनका व्यक्तित्व उनकी रचनाओं को अधिकाधिक बदलता जाता है। वे छायावाद के ऐसे कवि हैं जिनके यहां वैविध्य सबसे अधिक दिखेगा। यह वैविध्य विषयवस्तु से भाषा तक देखा जा सकता है। अपने साहित्येतिहास में आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने निराला की प्रतिभा को 'बहुवस्तुस्पर्शिनी' प्रतिभा कहा है। निराला का काव्य इस बात का प्रमाण है।

निराला के काव्य में संघर्ष और विद्रोह है। यह संघर्ष और विद्रोह उनके जीवन से जुड़ता है। इस संघर्ष और विद्रोह के जीवन से होते हुए साहित्य में संचरित होने को विश्वनाथ प्रसाद तिवारी दिखाते हैं : "उन्होंने जीवन भर सामाजिक-आर्थिक शोषण और निरर्थक परम्पराओं का विरोध किया। जीवन भर अंधकार की भयंकर शक्तियों से जूझते रहे लेकिन झुके नहीं। संघर्षों ने उन्हें विद्रोही बना दिया था। उनका सारा जीवन और साहित्य इसी विद्रोह की भूमि पर पनपा है।"

निराला की कविता पर विचार करते हुए छायावादी प्रवृत्तियों के साथ-साथ उन प्रवृत्तियों पर भी ध्यान जाता है जो छायावाद को छोड़कर कर प्रगतिवाद से जुड़ती हैं। और तो और, वस्तु और शिल्प के अनेक प्रयोगों के कारण रमेशचंद्र शाह निराला को प्रथम प्रयोगवादी भी कह देते हैं। इस तरह देखें तो निराला छायावाद के बाद के कवियों के प्रेरणा-पुरुष की तरह दिखाई देते हैं। उनके कविता-संकलन 'अनामिका' से लेकर 'सांध्य काकली' तक अनेक काव्य-प्रवृत्तियों को देखा जा सकता है।

भाव का आवेग कल्पना के विविध स्वरुपों को पैदा करता है। छायावाद की कल्पना कवियों के तीव्र भावावेगों से सम्बन्ध रखती है। निराला कविता को 'कल्पना के कानन की रानी' मानते हैं। ज्यों-ज्यों निराला अपनी काव्य-यात्रा करते जाते हैं उनकी कविता में कल्पना

© Dr Amrendra N. Tripathi, SGGS College

यथार्थ की तरफ मुड़ती जाती है। जो यात्रा 'जूही की कली' कविता से शुरू हुई वह बाद में कल्पना की ठोस जमीन तलाश लेती है। वायवीयता के आकाश में विचरने के बजाय वे कल्पना की सोद्देश्यता में यकीन रखते हैं :

"कल्पना के कानन की रानी !
आओ, आओ मृदु-पद, मेरे
मानस की कुसुमित वाणी!
मेरे प्राणों के प्याले को भर दो,
प्रिये, दृगों के मद से मादक कर दो
मेरी अखिल पुरातन-प्रियता हर दो
मुझको एक अमर वर दो
मैंने जिसकी हठ ठानी।"

नारी प्रेम और प्रकृति के सौंदर्य के चित्रण की दृष्टि से भी निराला की कविता महत्वपूर्ण है। जयशंकर प्रसाद की प्रेम सम्बन्धी कविताओं में माधुर्य भाव दीखता है। मधु उनका प्यारा शब्द है। सुमित्रानंदन पंत के यहां सरल और तरल भाव की प्रेम कवितायेँ हैं। परन्तु निराला की प्रेम कवितायेँ उद्दाम आवेग की प्रेम कवितायेँ हैं। कहीं-कहीं ऐन्द्रिक बोध जगाने वाले विधान उन कविताओं में हैं:

"बम्हन का लड़का
मैं उसको प्यार करता हूं

जाति की कहारिन वह,
मेरे घर की पनिहारिन वह,
आती है होते तड़का,
उसके पीछे मैं मरता हूं"

प्रकृति सौंदर्य को रखने वाले सूक्ष्म ऐन्द्रिय बोध जगाने वाली कवितायेँ भी निराला ने लिखी हैं। इन कविताओं में भाषा भी बहुत सशक्त रूप से भावों का प्रकटीकरण करती दिखाई देती है। इसे देखने के लिए निराला की 'बादल राग' कविता याद की जा सकती है। इस कविता में बरसात का अनूठा ध्वनि-चित्र हमारे सामने लाकर रख दिया गया है। भाव व भाषा दोनों बरसात के सौंदर्य को कितने आकर्षक तरीके से पेश करते हैं:

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

"झूम-झूम मृदु गरज-गरज घन घोर।
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!
झर झर झर निर्झर-गिरि-सर में,
घर, मरु, तरु-मर्मर, सागर में,
सरित-तड़ित-गति-चकित पवन में,
मन में, विजन-गहन-कानन में,
आनन-आनन में, रव घोर-कठोर-
राग अमर! अम्बर में भर निज रोर!"

'राम की शक्तिपूजा', 'सरोज-स्मृति' और 'तुलसीदास' जैसी कवितायेँ निराला के काव्य को अलग ऊंचाई देती हैं। इन कविताओं में बड़े सांस्कृतिक प्रश्न उठाये गए हैं। ये कवितायेँ महाकाव्यात्मक कवितायेँ हैं। आधुनिक समय में महाकाव्य के कथ्य को कवियों ने लम्बी कविताओं में प्रस्तुत किया है। इन लम्बी कविताओं में निराला ने अपने युग के सवालों से टकराने की कोशिश की है। 'राम की शक्ति पूजा' में राम के कंठ से अपने युग की ही निराशा का कथन किया गया है :

"... अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति।" कहते छल-छल
हो गये नयन, कुछ बूँद पुन: ढलके दृगजल

लेकिन कविता में अंततः सिद्धि मिलती है। आशय है कि तप और साधन करने के उपरांत शक्ति का आगमन अपने पक्ष में होगा :

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।"
कह महाशक्ति राम के बदन में हुई-लीन।

प्रगतिशील चेतना को किसी भी छायावादी कवि की तुलना में निराला के यहां अधिक स्पष्टता के साथ देखा जा सकता है। उनके अंदर यह चेतना बिना विचारधारा के जबरी हस्तक्षेप किये मौजूद है। निराला की 'दान', 'भिक्षुक', 'तोड़ती पत्थर' जैसी कवितायेँ प्रगतिशील भाव-बोध की कवितायेँ हैं। इनमें इस बुनियादी प्रश्न को बेहद संवेदनशीलता के

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College

साथ रखा गया है कि एक तरफ तो गरीब अनेक पीड़ा झेलता है दूसरी तरफ अमीर सुख की अट्टालिका पर मस्त है। ऐसा क्यों है? ऐसा नहीं होना चाहिए।

सांस्कृतिक और राष्ट्रीय जागरण की भावना छायावाद के कवियों की कविताओं में व्यक्त हुई है। चूंकि निराला में उद्दामता का स्वर है, इसलिए यह भावना भी उनकी कविताओं में उद्दामता के साथ आयी है। वे क्रान्ति का आह्वान भी अपनी रचनाओं में करते हैं। 'बादल राग कविता में निर्बल लोगों के माध्यम से क्रान्ति की संभावना जगाई गयी है, क्रान्ति का आह्वान किया गया है। देश में जागरण हो, यह भी निराला का अभीष्ट रहा है। इसके लिए उनके द्वारा 'स्वत्व' की भूमिका पर जोर दिया गया है। पश्चिम के नहीं, अपने मानकों के साथ आगे बढ़ा जाय और जागृति लाई जाय, यह निराला की सोच है:

शेरों की मांद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार!
... ...
योग्य जन जीता है
पश्चिम की उक्ति नहीं
गीता है गीता है
स्मरण करो बार-बार
जागो फिर एक बार.

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College, Pataliputra University
Mob – 9971437319
Email – amrendratjnu@gmail.com

© Dr. Amrendra N. Tripathi, SGGS College